Thearyasamaj.org

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org
वर्ष-8 अंक 6, मास जून 2015 विक्रमी संवत् 2072
दयानन्दाब्द 191 सृष्टि संवत् 1960853117, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

विश्व का प्रत्येक नागरिक पर्यावरण समस्याओं के समाधान हेतु अपना-अपना योगदान दें!

-डॉ.जगदीश गाँधी

(1) जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र संघ की चेतावनी :-

अभी मार्च 2014 में संयुक्त राष्ट्र की एक वैज्ञानिक समिति के प्रमुख ने चेतावनी दी है कि **अगर ग्रीनहाउस गैसों का प्रदूषण कम नहीं किया गया तो जलवायु परिवर्तन का दु प्रभाव बेकाबू हो सकता है।** ग्रीनहाउस गैसें धरती की गर्मी को वायुमंडल में अवरुद्ध कर लेती हैं, जिससे वायुमंडल का तामपान बढ़ जाता है और ऋतुचक्र में बदलाव देखे जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र पचौरी ने इस विषय पर 32 खंडों की एक रिर्पोट जारी की है। यह रिर्पोट 2610 पृष्ठ की है। पचौरी ने बताया, **समय की पुकार है कि अब कार्रवाई की जाये।** पचौरी ने कहा कि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम नहीं किया गया, तो हालात बेकाबू हो जाएंगे। **नोबल पुरस्कार विजेता** वैज्ञानिकों के दल द्वारा तैयार इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अधिक बढ़ा तो खतरा और बढ़ जाएगा।

(2) पर्यावरण असंतुलन आज वैश्विक चर्चा और चिंता का विषय बना हुआ है:

अभी पिछले वर्ष उत्तराखण्ड में आई भीषण प्राकृतिक आपदा, जापान के पिछले 140 सालों के इतिहास में आए सबसे भीषण 8.9 की तीव्रता वाले भूकंप की वजह से प्रशांत महासागर में आई सुनामी के साथ ही यूरोप में जानलेवा लू, अमेरिका में दावानल, आस्ट्रेलिया में भी ाण सूखा और मोजाम्बिक, थाईलैंड और पाकिस्तान में प्रलयकारी बाढ़ जैसी 21वीं शताब्दी की आपदाओं ने सारे विश्व का ध्यान इस अत्यन्त ही विनाशकारी समस्या की ओर आकर्षित किया है। कुछ समय पूर्व **पर्यावरण विज्ञान के पितामह श्री जेम्स लवलौक** ने चेतावनी दी थी कि **यदि दुनियाँ के निवासियों ने एकजुट होकर पर्यावरण को बचाने का प्रभावशाली प्रयत्न नहीं किया तो जलवायु में भारी बदलाव के परिणामस्वरूप 21वीं सदी के अन्त तक छः अरब व्यक्ति मारे जायेंगे।** संसार के एक महान पर्यावरण विशे ाज्ञ की इस भवि यवाणी को मानव जाति को हलके से नहीं लेना चाहिए।

(3) जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे भौगोलिक सीमाओं से बंधे हुए नहीं होते हैं:

आज जब दक्षिण अमेरिका में जंगल कटते हैं तो उससे भारत का मानसून प्रभावित होता है। इस प्रकार प्रकृति का कहर किसी देश की सीमाओं को नहीं जानती। वह किसी धर्म किसी जाति व किसी देश व उसमें रहने वाले नागरिकों को पहचानती भी नहीं। वास्तव में आज पूरे विश्व के जलवायु में होने वाले परिवर्तन मनुष्यों के द्वारा ही उत्पन्न किये गये हैं। परमात्मा द्वारा मानव को दिया अमूल्य वरदान है पृथ्वी, लेकिन चिरकाल से मानव उसका दोहन कर रहा है। पेड़ों को काटकर, नाभिकीय यंत्रों का परीक्षण कर वह भयंकर जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है। जिस पृथ्वी का वातावरण कभी पूरे विश्व के लिए वरदान था आज वहीं अभिशाप बनता जा रहा है।

(4) बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय कानून व प्रभावशाली विश्व न्यायालय की आवश्यकता :-

डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में दिसम्बर, 2010 में आयोजित सम्मेलन में दुनिया भर के 192 देशों से जुटे नेता जलवायु परिवर्तन से संबंधित किसी भी नियम को बनाने में सफल नहीं हुए थे। इस सम्मेलन के तुरंत बाद आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ब्राउन ने कहा कि **'यह तो बस एक पहला कदम**

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Thearyasamaj.org

है, इसे कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाने से पहले बहुत से कार्य किये जाने हैं।' असली दिक्कत यह है कि सार्वभौमिक हित का मसला होते हुए भी यहाँ राष्ट्रीय हितों का विकट टकराव है। हमारा मानना है कि कई दशकों से पर्यावरण बचाने के लिए माथापच्ची कर रही दुनियाँ अब अलग–अलग देशों के कानूनों से ऊब चुकी है। विश्व की कई जानी–मानी हस्तियों का मानना है कि **अब अंतर्राष्ट्रीय अदालत बनाने का ही रास्ता बचा है,** ताकि हमारी गलतियों की सजा अगली पीढ़ी को न झेलनी पड़ी।

(5) पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान :–

अभी हाल ही में **सैन फ्रांसिस्को स्थित गोल्डमैन एनवार्नमेंट फाउंडेशन द्वारा** भारत के **रमेश अग्रवाल** को पर्यावरण के सबसे बड़े पुरस्कार **'गोल्डमैन प्राइज'** से नवाजा गया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ में अंधाधुंध ा कोयला खनन से निपटने में ग्रामीणों मदद की और एक बड़ी कोयला परियोजना को बंद कराया। रमेश अग्रवाल छत्तीसगढ़ में काम करते हैं और वो लोगों की मदद से एक बड़े प्रस्तावित कोयला खनन को बंद कराने में सफल रहें। उनके साथ इस पुरस्कार को पाने वाले अन्य लोगों **में पेरु, रूस, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया और अमरीका के 6 पर्यावरण कार्यकर्ता शामिल हैं।** इन सभी विजेताओं को प्रत्येक को पौने दो लाख डालर की राशि मिलेगी। इससे पहले ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ाई के लिए **संयुक्त राष्ट्रसंघ के क्लाइमेट पैनल के श्री राजेन्द्र पचौरी और अमेरिका के पूर्व उप राष्ट्रपति श्री अलगोर** को शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

(6) प्रक ति से हमें उतना ही लेना चाहिए जितने से हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है:

हमारी पूर्व पीढ़ियों ने तो हमारे भवि य की चिंता की और प्रक ति की ध ारोहर को संजोकर रखा जबकि वर्तमान पीढ़ी प्राक तिक संसाधनों का भरपूर दोहन करने में लगी है। एक बार गांधीजी ने दातुन मंगवाई। किसी ने नीम की पूरी डाली तोड़कर उन्हें ला दिया। यह देखकर गांधीजी उस व्यक्ति पर बहुत बिगड़े। उसे डांटते हुए उन्होंने कहा **'जब छोटे से टुकड़े से मेरा काम चल सकता था तो पूरी डाली क्यों तोड़ी? यह न जाने कितने व्यक्तियों के उपयोग में आ सकती थी।'** गांधीजी की इस फटकार से हम सबको भी सीख लेनी चाहिए। **प्रकृति से हमें उतना ही लेना चाहिए जितने से हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है।**

(7) विश्व का प्रत्येक नागरिक पर्यावरण समस्याओं के समाधान हेतु अपना–अपना योगदान दें:–

जलवायु परिवर्तन की समस्या पर अभी हाल ही में **अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा** ने भी कहा है कि **जलवायु परिवर्तन पृथ्वी पर ऐसे बदलाव ला रहा है जिससे मानव जाति पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा।** उन्होंने अमेरिका के लोगों से स्वस्थ एवं बेहतर भविष्य के लिए पर्यावरण सुरक्षा का आग्रह किया। वास्तव में आज मानव और प्रकृति का सह–संबंध सकारात्मक न होकर विध्वंसात्मक होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में पर्यावरण का प्रदूषण सिर्फ किसी राष्ट्र विशेष की निजी समस्या न होकर एक सार्वभौमिक चिंता का विषय बन गया है। पर्यावरण असंतुलन हर प्राणी को प्रभावित करता है। **इसलिए पर्यावरण असंतुलन पर अब केवल विचार–विमर्श के लिए बैठकें आयोजित नहीं करना है वरन् अब उसके लिए ठोस पहल करने की आवश्यकता है,** अन्यथा बदलता जलवायु, गर्माती धरती और पिघलते ग्लेशियर जीवन के अस्तित्व को ही **संकट में डाल देंगे।** अतः जरूरी हो जाता है कि विश्व का प्रत्येक नागरिक पर्यावरण समस्याओं के समाधान हेतु अपना–अपना योगदान दें।

(8) जलवायु परिवर्तन जैसे महाविनाश से बचने के लिए अति शीघ्र विश्व संसद, विश्व सरकार एवं विश्व न्यायालय की आवश्यकता :–

विश्व भर में जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले खतरों से निपटने के लिए विश्व के सभी देशों को एक मंच पर आकर तत्काल विश्व संसद, विश्व सरकार तथा विश्व न्यायालय के गठन पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाना चाहिए। **इस विश्व संसद द्वारा विश्व के 2.4 अरब बच्चों के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए जो भी नियम व कानून बनाये जाये, उसे विश्व सरकार द्वारा प्रभावी ढंग से लागू किया जाये और यदि इन कानूनों का किसी देश द्वारा उल्लघंन किया जाये तो उस देश को विश्व न्यायालय द्वारा दण्डित करने का प्राविधान पूरी शक्ति के साथ लागू किया जाये।** इस प्रकार विश्व के 2. 4 अरब बच्चों के साथ ही आगे जन्म लेने वाली पीढियों को जलवायु परिवर्तन जैसे महाविनाश से बचाने के लिए अति शीघ्र विश्व संसद, विश्व सरकार एवं विश्व न्यायालय का गठन नितान्त आवश्यक है।

———

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर की साधारण सभा की बैठक दिनांक 24 मई 2015 (रविवार) को प्रातः 10 बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् प्रारम्भ हुई आर्य समाज के मन्त्री श्री सतीश मैहता जी ने वार्षिक विवरण पढ़कर सुनाया। सभी सदस्यों ने समाज की निरन्तर बढ़ती प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की। श्री सुधीर वर्मा जी ने वार्षिक आय–व्यय का विवरण रखा। निर्वाचन अधिकारी श्री भीषम लाल जी ने चुनाव की प्रक्रिया का प्रारम्भ करते हुए प्रधान पद के लिए सदस्यों से नाम भेजने का आग्रह किया। सभी सदस्यों ने समाज की श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार ध्वनिमत से अशोक सहगल जी के नाम का अनुमोदन किया तथा समर्थन किया। अन्त में निर्वाचन अधिकारी ने सर्वसम्मति से सम्पन्न इस चुनाव के लिए सभासदों का धन्यवाद किया तथा प्रधान जी को नई कार्यकारिणी तथा महिला आश्रम सम्बन्धी समस्त अधिकार गठन करने का अधिकार प्रदान किया। अन्त में नवनिर्वाचित प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने सभी सभासदों के प्रति अपना आभार प्रकट किया तत्पश्चात् श्री सतीश मैहता जी को मन्त्री एवं श्री सतीश कुमार जी को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया।

Thearyasamaj.org

'पत्नी घर का खजाना और पतिकुल की रक्षिका है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों को स्वयं पढ़ना व दूसरों को पढ़ाना सब श्रेष्ठ मनुष्यों का परम धर्म है। यह घोषणा महाभारत काल के बाद वेदों के विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सप्रमाण की है। वेदों का अध्ययन करने पर इसमें सर्वत्र जीवनोपयगी बहुमूल्य ज्ञान व प्रेरक विचार प्राप्त होते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया था और इसके लिए उन्होंने विस्तष्त विवरण प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द जी के अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं के अनुसार गुरूकुल कांगड़ी खोला और इसका अनुकरण कर बाद में बड़ी संख्या में गुरूकुल खोले गये जहां आर्ष संस्कृत व्याकरण सहित प्राचीन वैदिक शास्त्रों व ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। गुरूकुल कांगड़ी ने देश व समाज के अनेक वेदों के उच्च कोटि के विद्वान दिये जिन्होंने अपनी प्रतिभा से वेदभाष्य सहित बड़ी संख्या में वैदिक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनमें उत्तम कोटि की ज्ञान सामग्री है जिससे हम लाभान्वित हुए हैं वा अपने जीवन को और उन्नत कर सकते हैं। इस लेख में हम वेद के दो मन्त्रों के गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातक, वेदोपाध्याय, अथर्ववेद–सामवेद भाष्यकार और अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक पं. विश्वनाथ विद्यालंकार के लेखों पर आधारित नारी जाति से सम्बन्धित प्रेरक व उच्चता के विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस लेख में प्रस्तुत दोनों वेद मन्त्र अथर्ववेद के हैं। पहले मन्त्र का शीर्षक **'पत्नी घर का खजाना है'** है और दूसरे मन्त्र का **'पत्नी पतिकुल की रक्षिका है।'** पहला मन्त्र है–**'असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्व च। अन्तःकौशमिव जामयोऽपि नह्यामि ते भगम्।।'** **(अथर्ववेद 1/14/4)** इस मन्त्र में जो शब्द आये हैं वह हैं–**असितस्य, कश्यपस्य, गयस्य, च, ब्रह्मणा, ते, भगम्, अपि, नह्यामि, जामयः, अन्तः, कोशमिव।** असित शब्द से मन्त्र में बताया गया है कि परमात्मा बन्धन–रहित है। वह कश्यप है अर्थात् सर्वद्रष्टा है। वह गय है अर्थात् वह सर्वाधार है और प्राणस्वरूप है। **ब्रह्म अर्थात् "वेद" इस परमात्मा का ज्ञान है।** यह वर्णन करने के पश्चात पति अपनी पत्नी से कहता है कि परमात्मा के दिये वेद द्वारा **मैं तुझ में हे पत्नी ! सौभाग्यों (ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य) को स्थापित करता हूं। तू वेदों को पढ़ा कर और इस विधि से सौभाग्यों को प्राप्त किया कर।** वेदाध्ययन से प्राप्त होने वाले सौभाग्य को मनुष्य जीवन का खजाना भी कह सकते हैं। पति कहता है कि तू खजाने की तरह है। खजाने में जैसे उत्तम–उत्तम रत्नों को स्थापित किया जाता है वैसे ही तुझ में मैं वेद के सौभाग्य–रत्नों को स्थापित करता हूं ताकि तू **"अन्तःकोश"** की तरह बन जा, घर के अन्दर पड़े खजाने की तरह बन जा। खजाना घर के अन्दर रखा जाता है और उस खजाने में बहुमूल्य रत्न आदि रखे जाते हैं। इसी प्रकार का तू खजाना बन और तुझ में वैदिक सौभाग्य–रत्न विद्यमान रहें। प्रत्येक पत्नी को "अन्तःकोष" की तरह बनना चाहिये। **इस के लिए उसे दैनिक स्वाध्याय करना चाहिये, दैनिक वेद–पाठ करना चाहिये। ताकि वेद के रत्नों को यह प्राप्त कर सके।** इस मन्त्र में सृष्टिकर्त्ता और वेदज्ञानदाता परमात्मा ने मनुष्यों को शिक्षा दी है कि वेदों का पढ़ना सौभाग्य को प्राप्त करना है। वेद विद्या का पर्याय है। शास्त्र कहते हैं कि संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ भी नहीं है। गायत्री मन्त्र ईश्वर से बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना के कारण ही वेदों का एक श्रेष्ठ मन्त्र है जिसकी तुलना में संसार के धर्म ग्रन्थों इसके समान उत्तम विचार नहीं है। प्राचीन काल और वर्तमान काल में बहुत कुछ बदला है परन्तु ज्ञान की महत्ता प्राचीन काल में भी थी और आज भी है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अतः सभी को वेदों का नित्यप्रति स्वाध्याय करना चाहिये। यह इस वेद की मुख्य शिक्षा मुख्यतः पत्नी के लिए है, और प्रकारान्तर से सभी मनुष्यों के लिए भी है, जिससे वह अपनी सन्तानों को भी वेदज्ञान से सम्पन्न कर सके। आईये, इस वेदमन्त्र में प्रयुक्त प्रत्येक पद वा शब्दों के अर्थ भी जान लेते हैं–**(असितस्य) बन्धन–रहित, (कश्यपस्य) सर्वद्रष्टा, तथा (गयस्य च) सर्वाधार या प्राणस्वरूप परमात्मा के (ब्रह्मणा) वेद–ज्ञान के द्वारा (ते) तुझ में (भगम्) भगों को (अपि नह्यामि) मैं बान्धता हूं, (जामयः) स्त्रियां (अन्तः कोशमिव) अन्दर के खजाने की न्याईं हैं।**

दूसरा मन्त्र है **'एशा ते कुलपा राजन् तामु ते परि ददमसि। ज्योक् पितश्श्वासाता आ शीर्ष्णः शमोष्यात्।।' (अथर्ववेद 1/14/3)।** इस मन्त्र में जो शब्द आये हैं वह हैं–**राजन्, एशा, ते, कुलपा, ताम् उ, ते, परि ददमसि, ज्योक्, पितश्शु, आसाते, आ, शीर्ष्णः, शमोष्यात्।** मन्त्र में ईश्वर ने शिक्षा दी है कि गृहस्थ–जीवन में पति राजा है और पत्नी इस कुल की पालना करने वाली राणी है। पत्नी को कुलघ्नी न कह कर "कुलपा" कहा गया है। इस भाब्द द्वारा पत्नी का मान बढ़ाया गया है, तथा साथ ही पतिकुल में आकर उस का क्या कर्तव्य होना चाहिये, इस को भी सूचना दी गई है। बिना पत्नी के पतिकुल की रक्षा तथा पालना नहीं हो सकती। साथ ही पत्नी को यह समझना चाहिये कि वह पतिकुल में आकर पतिकुल की रक्षा तथा पालना का बोझ अपने ऊपर लेती है।

Thearyasamaj.org

पतिकुल के पितरों में रहना, उनका साथ निभाना, तथा उनकी सेवा–शूश्रूषा करना––नववधू का कर्तव्य है। नियत काल तक गृहस्थ–जीवन व्यतीत कर यदि पत्नी वानप्रस्थ आदि आश्रमों में जाना चाहें तो यह अधिकार भी उसे प्राप्त है। पतिकुल में रहती हुई पत्नी अपने सिर से इस कुलभूमि में शान्ति के बीज बोया करे। सिर से अभिप्राय विचारशक्ति का है। पत्नी अपनी विचारशक्ति से इस कुलभूमि में शान्ति, प्रेम, अनुराग, उदारता, धर्म आदि सद्गुणों के बीज बोए, ताकि ये बीज महावृक्ष होकर गृहस्थ को अपनी छाया द्वारा सुखी रखें।

पाठको की सुविधार्थ मन्त्र के शब्द और उनके हिन्दी अर्थ व भाव भी प्रस्तुत हैं। मन्त्रार्थः– (राजन्) हे पति राजा ! (एशा) यह कन्या (ते) तेरे (कुलपा) कुल की पालना करने वाली है, (ताम् उ) उसको (ते) तेरे लिए (परि ददमसि) हम पूर्णरूप से देते हैं। (ज्योक्) बहुत देर तक (पितृशु) पतिकुल के बुजुर्गों में (आसाते) यह बनी रहे, (आ+शीर्ष्णः) और अपनी विचारशक्ति से (शमोप्यात्) शान्ति के बीज बोए।

वेदों में हमें नारी जाति के विषय में बहुत ही सम्मानजनक एवं प्रशंसाप्रद वचन पढ़ने को मिलते जो वर्तमान में प्रचलित किसी भी मत–सम्प्रदाय के ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होते जबकि यह विगत 500 से 4000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आये हैं। यह ज्ञान के ह्रास का उदाहरण है न कि विकासवाद का। अतः यहां विकासवाद असफल रहा है। हमें मध्यकाल व बाद से यह पढ़ने व सुनने को मिलता है कि **'स्त्री शूद्रो नाधीयताम्'** अर्थात् स्त्री व शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं, नारी नरक का द्वार है, स्त्री और शूद्र यदि वेद पढ़ें तो उनकी जिह्वा काट दी जाये या कानों में रांगा पिघाल कर डाल दिया जाये, लम्बे समय तक स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा गया, हमारे ही देश में बाल विवाह प्रचलित हुए जिससे न केवल नारी जाति का अपमान हुआ अपितु इन पर एक प्रकार से अकथनीय अत्याचार भी हुए। यही स्थिति विदेशों में उत्पन्न सभी मत–मतान्तरों की हैं। इसके विपरीत वेदों के आधार पर हम रामायण में माता सीता, कौशल्या, कैकेयी व सुमित्रा आदि का जीवन देखते हैं और अन्य सभी महाभारत, मनुस्मृति व उपनिषदादि प्राचीन ग्रन्थों में ऋषिकाओं आदि के बारे में पढ़ते हैं तो हमें वैदिक संस्कृति का गौरव विदित होता है। **मनुस्मृति में यह पढ़कर तो हम ऋषियों के प्रति नतमस्तक व भाव विभोर हो जाते जब वह घोषणा करते हैं कि जिस देश व समाज में नारी क सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं और जहां नहीं होता वहां के सभी कार्य व कियायें विफलता को प्राप्त होते हैं।** अतः हमने उक्त दो वेदमन्त्रों को एक बानगी के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे कि पाठक वेदों के अध्ययन में प्रवृत्त होकर मनुष्य जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष लाभ उठा सकें। हम आशा करते हैं कि पाठकों को यह लेख पसन्द आयेगा जिससे हमारा परिश्रम सार्थक होगा।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001, फोनः09412985121

श्री नरेन्द्र मोदी

आज चारों तरफ खुशी का सम्राज्य है
श्री नरेन्द्र मोदी युवकों के दिल की आवाज है

भारत ने फिर से नई करवट ली है
ताज पोशी मोदी की इस का प्रमाण है।
छोटे बड़े सब के मन में,
आशा की किरण जगी है,
भारत के नव निर्माण की भावना
उत्प्रेरित हुई है।
कल्पना की दौड़ राम राज्य तक पहुँची है
कन्याकुमारी से कश्मीर तक
बन्देमातरम् की गूँज उठी है।।
भ्रष्टाचार, घूसखोरी, मँहगाई से
मुक्त भारत हो
जन –जन की आवाज है।
विकासशील देशों की दौड़ में,
भारत का नया अंदाज़ है।।
सैन्य बल में भी आत्म विश्वास जगाकर
नव शस्त्रगार सजाना है।
क्षाग बल जगाने के लिए
फिर से गीता का उपदेश सुनाना है।।
गंगा, गोदावरी सरस्वती जैसी पवित्र नदियाँ
जिस देश की धाती है
हिमालय का चौड़ा सीना
भारत की निराली शान है।

–अमृत आर्या,
प्रधाना, आर्य स्त्री समाज बहावलपुर

श्री के.एल. गंजू जी को मातृशोक

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के विशिष्ट सहयोगी, कामरोस संघ के राजदूत श्री के.एल. गंजू जी की माता जी श्रीमती रतन रानी गंजू जी का दिनांक 24.04.2015 को आकस्मिक निधन हो गया। दिनांक 04.05.2015 को साई इन्टर नेशनल आडोटोरियम में दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। अनेक गणमान्य सज्जन तथा अधिकारियों ने उपस्थित होकर माता जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की श्रीमती रतन रानी गंजू जी धार्मिक, सुशीला एवं कर्तव्यपरायण आदर्श महिला थीं। वह सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने अपने परिवार को उत्तम संस्कारों से विभूषित किया। गंजू परिवार के सभी सदस्य सुसंस्कृत एवं उच्च प्रतिष्ठित पदों पर आसीन हैं। यह सब स्व. रतनरानी गंजू जी का ही आशीर्वाद का फल है। ऐसी पुण्यात्मा का वियोग निश्चय ही कष्ट दायी होता है। परमात्मा से हम सभी आर्यजन दिवंगत पुण्यात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

– सतीश मैहता, मंत्री

Thearyasamaj.org

सर्वस्व त्यागी, महान तपस्वी - महात्मा हंसराज

– आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते भवन्ति
भूयः पुरुषः सुरत्वात् ।।

धन्य हैं वे लोग जो भारत भूमि के किसी भाग में उत्पन्न हुए। यह भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, क्योंकि यहाँ स्वर्ग के अतिरिक्त मोक्ष की साधना भी की जा सकती है। स्वर्ग में देवत्व भोग लेने के बाद देवता मोक्ष की साधना के लिए कर्मभूमि भारत में फिर जन्म लेते हैं।

ऐसे ही पुण्यभूमि में पंजाब के प्रसिद्ध नगर होशियारपुर से तीन मील दूर कस्बा बजवाड़ा में 19 अप्रैल 1864 को महात्मा हंसराज का जन्म हुआ। वे बाल्यावस्था से ही कुशाग्रबुद्धि के थे। स्वामी दयानन्द जी से दिव्य प्रेरणा पा करके सामाजिक कार्य में बढ़ चढ़कर भाग लेने लगे। जीवन भर गरीबों, दुःखियों, विधवाओं, अनाथों की सेवा में लगे रहे।

डी.ए.वी. जो एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है, जिसकी कीर्ति देश विदेश में फैली हुई है, उस सबका श्रेय त्याग तपस्या के साक्षात् मूर्ति महात्मा हंसराज जी को है। महात्मा हंसराज जी परगुण प्रकाशन के सूर्यमुखी परादर के हरसिंगार, विनम्रता की बेला, कृतज्ञता की मालती, शालीनता की चम्पा, एवं देदीप्यमान सूर्य की तरह थे।

वह ऐसे कमल हैं जो स्वगुणश्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते हैं तो परगुण कथन के दिवस में विस्तूत हैं।

एक बार की बात है कि किसी ने हंसराज जी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है। इस पर महात्मा जी कहने लगे – मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए 2500 रुपया दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई नहीं समझता। क्योंकि कठिनाई को कठिनाई समझना ही बहुत बड़ी कठिनाई है। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे सन्त पुरुष थे।

परगुण परमाणून् पर्वती कृत्य नित्यम्।
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्त।।

महात्मा हंसराज सादे कपड़े में एक सच्चे संन्यासी थे। एक दिन वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के समीप आर्यसमाज के कुछ संन्यासी पहुँचे और निवेदन करने लगे कि हम महात्मा हंसराज जी से कहना चाहते हैं कि वे संन्यास की दीक्षा लें। कृपया आप हमारे अगुवा बनकर महात्मा जी के पास चलें।

इस पर स्वामी सर्वदानन्द जी ने बड़े गंभीर होकर कहा– महात्मा हंसराज तो मुझसे भी बड़ा संन्यासी है। सफेद कपड़ा पहनता है तो क्या हुआ? हम तो कपड़े से संन्यासी है, वह मन से संन्यासी है। भला मैं उनसे संन्यास लेने को कैसे कहूँ? स्वामी जी की इस बात को सुनकर अन्य संन्यासियों ने अपना विचार छोड़ दिया और वे वापिस लौट गये।

महात्मा हंसराज जी महान ईश्वर भक्त थे, वे गायत्री का जाप एवं दोनों काल संध्या करते थे, यही कारण है कि वे पहाड़ जैसे दुःखों का सामना कर पाये। महात्मा हंसराज जी की पत्नी का देहावसान हो गया पुत्र बलराज कारावास में था। उनके भाई को आर्थिक संकट ने आ दबोचा ऐसी विषम परिस्थिति में महात्मा जी धैर्यपूर्वक आर्यसमाज की सेवा में संलग्न थे। उनके जीवन में निम्नलिखित पंक्ति चरितार्थ होती हैं–

अपने दुःख में रोने वाले मुस्कुराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले।।
जो खिलाने में मजा है, आप खाने में नहीं। जिंदगी में तू किसी के काम आना सीख ले।।
वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले।

ऋग्वेद का निम्नलिखित मन्त्र महात्मा जी को बहुत प्रिय था, वे प्रेम पूर्वक इस मंत्र का जाप करते थे– **यदङ दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेतत् सत्यमङिरः।।** उन्हें निम्नलिखित भजन अत्यन्त प्रिय था। वे सुबह उठकर गान किया करते थे –

प्रभु जी भेंट धरुं क्या मैं तेरी?
माल नहीं मेरे सम्पद् नाहीं, जिसको कहूँ मैं मेरी, इस जग में हम ऐसे विचरें, जोगी कर ज्यों फेरी। यह तन यह मन होवे न अपना, है सब माल तुम्हारा, जब चाहे तब ही तू लेवे, नहीं कुछ जोर हमारा। धन, जन, जीवन अपना माने, मूरख भूला भारी, तुझ बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं विचारी। तुमरे ही दर का मैं सेवक, स्वामी, लाज तुझे है मेरी, चरण शरण निज अर्पण करके, देओ भक्ति बिन देरी।।

ऐसे महान ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी, समाजसुधारक, ऋषिभक्त, डी.ए.वी. के सर्जक, अनेक संस्थाओं के प्राण, महान शिक्षाविद् अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता, निष्काम सेवा के मूर्ति, परोपकारी महात्मा हंसराज जी को सादर प्रणाम। जीवन उन्हीं का धन्य है, जीते हैं जो सबके लिये। धिक्कार है उनके लिए, जीते हैं जो अपने लिये।। जन्म होता है सुजन का विश्व के उद्धार को। विश्व सेवा, विश्वमंगल, विश्व के उपकार को।।

Thearyasamaj.org

ईश्वर के कामों पर शंका-समाधान

कई सज्जन शंका करते हैं कि भगवान हमारी शंकाओं का समाधान क्यों नहीं करता? किन्तु उन्हें समझना चाहिये कि भगवान के कार्यों पर शंका-समाधान हमारे अपने ही कार्यों से होता है।

शंका -ईश्वर सिद्धि -

समाधान आप जगत का कोई भी पदार्थ ले लीजिये, उसका बनाने वाला कोई अवश्य है, मकान, कपड़ा, पुस्तक आदि सब किसी न किसी ने बनाये है। यह बात विचारणीय है कि क्या पदार्थ स्वयं क्रिया कर सकता है? एक पुस्तक दायें हाथ में रखी है। यह स्वयं बायें हाथ में नहीं आ सकती। आपकी पुस्तक यदि एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर कोई रख दे तो आप पूछेंगे कि मेरी पुस्तक यहाँ किसने रखी है? इन बातों से सिद्ध होता है कि जड़ पदार्थ परतन्त्र हैं- दूसरे के तन्त्र अर्थात् प्रबन्ध के अधीन हैं, वे स्वतन्त्र नहीं। रेल स्टेशन पर यदि एक बच्चा अपने पिता से बिछुड़ जाता है तो पिता के पुकारने पर वह बोल उठता है, यदि किसी का ट्रंक रेल गाड़ी से छूट गया हो तो उस ट्रंक को कोई भी पुरुष आवाज़ देकर नहीं पुकारेगा कि हे ट्रंक! तू कहां है। अपने दैनिक व्यवहारों से हम भगवान को पहचानते हैं। संसार के जड़ पदार्थ स्वयं नहीं बने, किसी बनाने वाले ने ही बनाये है। जगत का रचयिता भगवान है।

शंका-सब जीवात्मा परमात्मा के पुत्र हैं। उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने में परमात्मा बुरी तरह से फेल है, वह अपने काम में गाफिल है। इन शंकाओं का समाधान इस प्रकार हो सकता है- एक बच्चा अपने पिता के साथ बाजार जा रहा था, उसने रास्ते में कलमी बड़े देखे और पिताजी से बोला कि पिताजी! मुझे एक पैसे के कलमी बड़े ले दीजिये। पिता के मना करने पर कि ये तेरे खाने योग्य नहीं क्योंकि तुझे खांसी है, बालक निराश होकर चुप रह गया। घर आकर उस बालक ने अपने जैसे कुछ बालकों से बोला कि मेरे पिता जी मेरी इच्छा पूर्ति करने में फेल हैं। सभी बच्चे उसके साथ स्वीकृत हो गये। हमें बच्चों की तरह से फैसला नहीं करना चाहिये, बड़ों की तरह से सोचना चाहिए।

शंका- परमात्मा पाप करते हुए मनुष्य को रोकता क्यों नहीं? समाधान जिस प्रकार एक मास्टर जो विद्यार्थी को बड़े प्रेम से पढ़ाता है, कई बार उसे बताता है। वही मास्टर परीक्षा के समय विद्यार्थी के पास खड़ा हुआ देख रहा है कि यह प्रश्न का उत्तर अशुद्ध लिख रहा है, किन्तु वह उसे न तो बताता है न ही रोकता है। इसी प्रकार परमात्मा मनुष्यों की परीक्षा लेता है और कर्म करते हुए उन्हें रोकता नहीं है। इसी प्रकार के हमारे काम परमात्मा के प्रति हमारी शंकाओं का निवारण करते हैं। अच्छा कार्य करने से हमें अच्छा फल मिलता है और पाप करने से हमें बुरा फल मिलता है।

शंका-पापी मनुष्य प्रायः सुखी रहते हैं और पुण्यात्मा दुःखी होते हैं क्यों?

समाधान- विचार करके देखिये अच्छा कर्म करते-करते यदि हमें कुछ बुरा फल मिला हो तो वह फल हमारे इन कर्मों का नहीं अपितु पिछले कर्मों का फल है वर्तमान अच्छे कर्म कारण और वर्तमान बुरा फल उनका कार्य नहीं होता।

शंका - भगवान जब शक्ल-सूरत वाला नहीं है, तब वह जगत को कैसे बनाता हैं?

समाधान- सुनिये शरीरधारी मनुष्य जो कुछ जानता है वह अपने से बाहर बनाता है और परमात्मा अपने अन्दर ही सब कुछ बनाता है।

शंका- परमेश्वर दयालु और न्यायकारी कैसे है क्योंकि दयालुता और न्यायकारिता परस्पर विरुद्ध हैं?

समाधान -न्याय और दया का नाममात्र ही भेद है क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से ईश्वर पूर्ण दया तो यह है कि जिसने सब जीवों के प्रयोजन सिद्ध होने के अर्थ जगत में सकल पदार्थ उत्पन्न करके दे रखे हैं। इस से भिन्न दूसरी बड़ी दया कौनसी है? अब न्याय का फल, प्रत्यक्ष दीखता है कि सुख दुःख को व्यवस्था अधिक और न्यूनता से फल को प्रकाशित कर रही है। इन दोनों का इतना ही भेद है तो मन में सब को सुख होने और दुःख छूटने का इच्छा और क्रिया करना है वह दया और वाह्य-चेष्टा अर्थात् बन्धन छेदनादि यथावत् दण्ड़ देना है, वह न्याय कहाता है। दोनों का एक प्रयोजन यह है कि सबका पाप और दुःखों से पृथक् कर देना। स्वार्थी पुरुष भी पूर्ण न्याय या सर्वाहित नहीं कर सकता। वह अन्यों के लाभ की अपेक्षा अपने स्वार्थ को अधिक मूल्यवान समझता है और दूसरे के बड़े-बड़े लोभ को अपने तुच्छ से तुच्छ लोभ पर कुर्बान कर देता है। यह बहुत कम देखा जाता है कि मनुष्य न्याय करे और वह पखपात रहित हो। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान होने के कारण कई दोषों से युक्त होता है। धन का लालच, रिश्तेदारी, मित्रता दूसरे का भय और मोह आदि उसको पूर्ण न्याय नहीं करने देते। ईश्वर इन त्रुटियों से रहित होने के कारण पक्षपात रहित न्याय करता है।

-केवल प्रयास करता
नारायण प्रयासी, राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का 63वाँ वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली का 63 वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेदीय बृहद्यज्ञ का कार्यक्रम दिनांक 11 अप्रैल से 19 अप्रैल तक बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक वेदप्रचार का विशेष प्रकार का कार्यक्रम हुआ, जिसमें हेमंत शास्त्री जी (पुणे) के सुमधुर भजनों के पश्चात् डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी के हृदयग्राही उपदेश हुए।

प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ के कार्यक्रम में आर्य जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, इससे पूर्व दिनांक 11 अप्रैल को आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, इसमें दिल्ली प्रदेश की आर्य समाजों से अनेक आर्यमहिलायें उपस्थित थीं दिनांक 12 अप्रैल को बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हर्षाल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया 19 अप्रैल प्रातः यज्ञपूर्णाहुति के बाद आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका विषय था, "आर्य समाज की दशा एवं दिशा" अनेक वैदिक विद्वानों ने इसमें अपने विचार रखे, जिनमें से प्रमुख थे, आचार्य गवेन्द्र जी, आचार्य श्याम देव जी, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री आदि। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. शिवदत्त पाण्डेय जी ने की। समाज के यशस्वी प्रधान एवं सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री अशोक सहगल जी ने विभिन्न समाजसेवियों को आर्य रत्न की उपाधि देकर सम्मानित किया।

दिनांक 12 अप्रैल को सम्पन्न हुए बाल सम्मेलन के सफल प्रतिभाशाली छात्र व छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्यसमाज के कर्मठ मंत्री श्री सतीश चन्द मैहता जी ने किया। श्री ओमप्रकाश खत्री एवं श्रीमती सुरीला खत्री द्वारा आयोजित ऋषि लंगर के साथ कर्यक्रम सम्पन्न हुआ।

Thearyasamaj.org

वार्षिकोत्सव की सचित्र झलकियाँ

यज्ञ ब्रह्मा डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी व्याख्यान देते हुए, साथ है आचार्य गवेन्द्र जी एवं आचार्य श्यामदेव जी।

प्रधान अशोक सहगल जी, श्री सतीश मैहता जी, द्वारा श्री ओमप्रकाश खत्री एवं श्रीमती सुरीला खत्री जी का सम्मान।

ध्वजारोहण के समय शान्त मुद्रा में उपस्थित, आर्यजन

श्रीमती अमृत आर्या जी, श्रीमती जनक चुग जी, श्रीमती आदर्श सहगल जी अभिनन्दन करते हुए ।

श्रीमती सुरीला जी का स्वागत करती समाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती उमा बजाज जी।

श्री एस.एन. वासुदेवा जी को आर्य रत्न समाज प्रदान करते हुए श्री अशोक सहगल जी, श्री सतीश मैहता जी, श्री नरेन्द्र वलेचा जी।

Thearyasamaj.org

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

Date of Posting 12 & 13, at S.R.T. Nagar, Post Office, ND-55

पद्मश्री डॉ. ए.के. ग्रोवर जी को आर्य रत्न सम्मान से विभूषित करते हुए श्री अशोक सहगल जी, श्री सतीश मैहता जी, श्री नरेन्द्र वलेचा जी।

विजेता प्रतियोगी को पुरस्कार देते हुए मन्त्री श्री सतीश मैहता जी।

श्री एस.के कुमरा जी को आर्य रत्न सम्मान प्रदान करते हुए समाज के अधिकारीगण

श्रीमती उमा बजाज जी पारितोषिक देती हुई।

सम्संग में उपस्थित माताओं एवं बच्चों का एक दृश्य

प्रसन्तमुद्रा में व्याख्यान श्रवण करते हुए आर्यजन।

Printed and published by **Sh. S.C. Mehta** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Dr. Kailash Chandra Shastri**